Sindhu

Monthly Bulletin for Divine Message of Spiritual Relationship, Friendship and Love

Vol. 010 Issue 09-10 SEP-OCT 2024 Pages 28 A.S. Rs 100

Samp Suhradbhav Ekta Parva

P.P. Dinkarbhai's 80th Birthday Celebration at Surat

सत्संग समाचार

❊ दि. ७ सितंबर को गुरुहरि काकाजी महाराज की स्मृति में भजन संध्या 'अक्षरधाम' स्वामिनारायण मंदिर, पवई में भक्तिभावपूर्वक मनाई गई। गणेशचतुर्थी के मंगल दिन 'अक्षरधाम' स्वामिनारायण मंदिर, पवई में संतभाईयों, संतबहनों और स्थानिक हरिभक्तों की उपस्थिति में गणेशजी की चलमूर्ति की स्थापना हुई।

शिकागो से प.पू. वशीभाई ने कहा कि यहाँ शिकागो में भी हमने भजन संध्या की। गुरुहरि काकाजी महाराज Atlantic City में आये थे। तभी सभी के घर उन्होंने पधरामणी की थी। उस समय Quarters में सब रहते थे तो उनके चरण पडने से सभी की तरक्की इतनी हुई कि आज वह भक्तों बंगलो में रहते हो गये। सचमुच काकाजी दो हाथ से देनेवाले गुणातीत संत थे। प्रगट सत्पुरुष की स्मृति में हमें डूबना है। हम जो भजन संध्या करते है उसमें हमें ऐसे गुणातीत स्वरुपों के भजन सुनते हुए डूबते है। उससे हम निर्वासनिक हो जाते है। काकाजीने हमें झूकना सिखाया। तो हम ऐसे नम्रभाव से सभी की सेवा करें वही प्रार्थना।

शिकागो से प.पू. दिनकरभाई ने भी गुरुहरि काकाजी महाराज स्वधाम पधारे उसकी स्मृति ताजी की।

प.पू. भरतभाई ने आशीष देते हुए कहा कि गणपतिजी का पर्व चल रहा है। उनकी कुछ विशेष बातें हम समझने का प्रयत्न करें। **(१)** गणेशजी के कान बडे है। हमको सुनना नहीं है, केवल बोलना ही है। तो गणपतिजी के पास हम यह सीखे कि हमें हर किसीका सुनना चाहिए। **(२)** गणपतिजी के कान में कोई भी नकारात्मक या अभाव-अवगुण की बातें आती है तो वे पेट में रखते है। इतना विशाल उनका उदर है। **(३)** वे अपने माता-पिता का बहुत सन्मान करते थे। स्वामिनारायण भगवान के मंदिर में गणेशजी, हनुमानजी हमेशा आगे होते है। उसके बाद प्रभु का दर्शन करने सब जाते है। गणपतिजी यानि विघ्नहर्ता देव है। तो हम मंदिर जाये तब उन्हें प्रार्थना करनी चाहिए कि प्रभु के दर्शन में जाते समय जो भी विघ्न आते है उसे आप दूर करना।

गुरुहरि काकाजी कहते थे कि साधुता जैसी कोई भी पदवी बडी नहीं है। हमें साधुता में रहकर जीवन जीना है। सन् १९८६ में काकाजी एक भक्त के कहने पर मूर्तिजापूर ट्रेन में सेकंड क्लास के डब्बे में संतों, हरिभक्तों के साथ गये थे। साधुता की मिसाल यानि काकाजी। काकाजी Real Essence of Tantra पुस्तक लिखने के लिये बहुत सारी अन्य पुस्तकों का Reference लेते थे। तो उसके लिये एक पुस्तक की दुकान में जाते और उसके अनुलक्ष जो पुस्तक होगी वो पढ लेते थे। फिर तारदेव आकर Real Essence of Tantra का लिखना शुरु करते थे। Nobel Prize मिले ऐसा अद्भुत पुस्तक काकाजीने हमें दिया है। काकाजीने हमारे लिये ही जीवन जीया है। छोटी सी छोटी बात में भी हमें छोडना सीखना है। गुणातीत स्वरुपों हमारे लिये ही जीवन जीते है। मंदिर में रीति से रहना चाहिए। आरती, भजन, सेवा, सभा सभी में हाजर रहना है। काकाजीने जो जीवन जीया उसमें से कुछ बातें हम हमारे जीवन में उतारे वही प्रार्थना।

❊ प.पू. वशीभाई और पू. अश्विनभाईने दिनकरभाई के साथ शिकागो में कई हरिभक्तों के घर पधरामणी, महापूजा तथा सत्संग का लाभ दिया।

At Kirtibhai's home, Chicago

Mahapooja at Sitaji's home, Chicago

At Mahalaxmiben's home, Chicago

Youth Sabha in Palatine, Illinois

With Swami Kevalanand Saraswati at Hariharbhai's home

At Vandanbhai's home , Chicago

Janmashtami and Rakshabandhan Celebrations at DesPlaines Temple

At Nirbhikbhai's home

At Ramanbhai's home, Illinois

सोमवार, दि. २७ और दि. २९ सितंबर को शिकागो में DesPlaines मंदिर में संतभगवंत साहेबजी, विरपुर के पू. निर्मलस्वामीजी, प.पू. वशीभाई, पू. अश्विनभाई तथा स्थानिक हरिभक्तों की हाजरी में साहेबजी का ८५वाँ तथा प.पू. दिनकरभाई का ८०वाँ प्रागट्यदिन भक्तिभाव से मनाया गया।

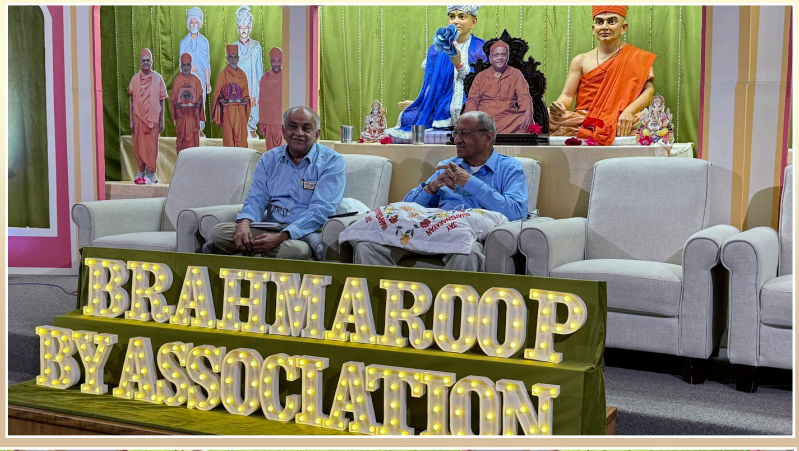

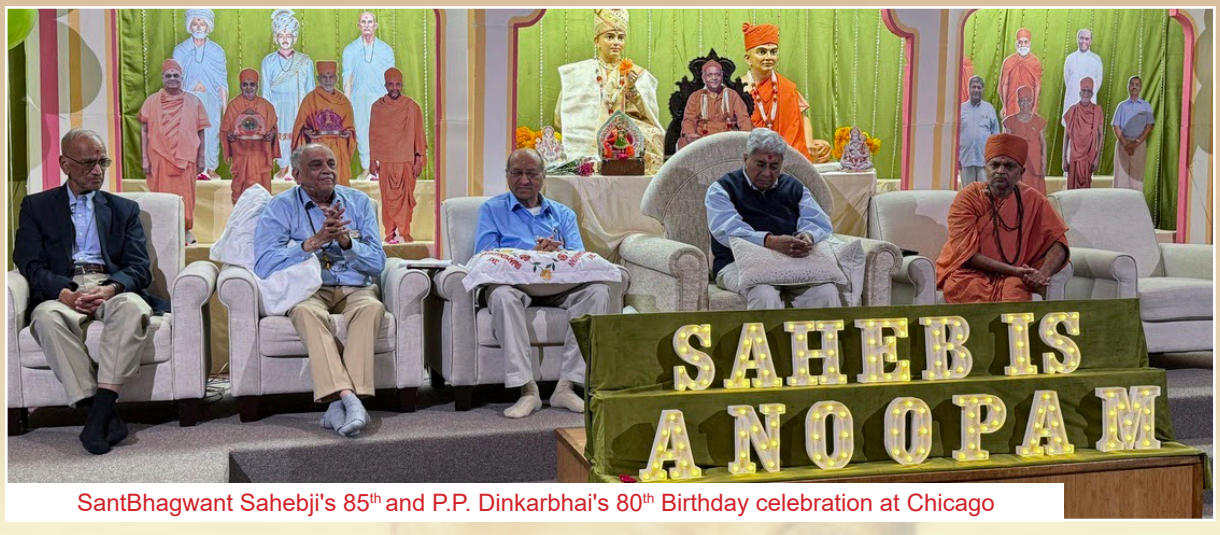

SantBhagwant Sahebji's 85th and P.P. Dinkarbhai's 80th Birthday celebration at Chicago

ऐसे तो दिनकरभाई का ही प्रागट्यदिन मनाने का कार्यक्रम था, लेकिन दिनकरभाई की भावना थी कि साहेबजी पधार रहे है तो उनका ही ८५वाँ प्रागट्यदिन मनाये तो सभी राजी होंगे। उनके इस छोटे से सूचन को तत्परतापूर्वक मानकर सभी युवकोंने साहेबजी के ८५वें प्रागट्यदिन अनुरुप पूरा कार्यक्रम तैयार कर दिया और उन्हें Surprise दिया।

संतभगवंत साहेबजी ने आशीष देते हुए कहा कि गुरुहरि काकाजी महाराज ऐसे स्वरुप थे जिनके साथ हम कोई भी बात करें - व्यवहारिक से लेकर राजनीति की - अंत में उनके प्रवचन की पूर्णाहुति ब्र.स्व. योगीजी महाराज की बात से ही होती थी। यहाँ काकाजी के साथ हमने बहुत विचरण किया है। उस समय किसीके पास समय नहीं था और ज्यादा डॉलर भी नही थे। ऐसे समय में दिनकरभाईने काकाजी के साथ हमारी भी प्लेन की टिकट करके उनके घर आमंत्रित किया था। ऐसे मौके पर सेवा करके दिनकरभाईने काकाजी का राजीपा प्राप्त कर लिया। ब्रह्मस्वरुप अवस्था को प्राप्त करना कठिन है। गुणातीतभाव को

प्राप्त किये हुए साधु को हम राजी कर लेंगे तो हमारे लिये मोक्ष का द्वार सहज ही खुल जायेगा। जिसको संत की पहचान हो जाती है वही सच्चा भक्त है। आर.डी. काकाने काकाजी को ऐसा पहचान लिया और वो बोले उठे कि काकाजी सच्चे साधु है। काकाजी की महानता यही थी कि योगीबापा की आज्ञा में अपना पूरा जीवन समर्पित कर दिया। जो वस्त्र धारण किये है उसकी महत्ता नहीं है, लेकिन भगवान की प्रसन्नता मिले वही सच्ची साधुता है। ऐसे सच्चे साधु दिनकरभाई के रुप में हमें मिले।

हमारे लिये वे काकाजी स्वरुप ही है। उनकी आज्ञा मानेंगे वो काकाजी की ही आज्ञा मानने के समान है।

आज विज्ञान कितनी भी प्रगति कर ले लेकिन शांति और आनंद के लिये कुछ भी नई रचना नहीं कर सकता। जब अंतर में अहंकार का नाश होगा तो अंतर में सहज ही आनंद और शांति प्राप्त होगे। अपेक्षारहित का जीवन बनेगा तो सहज ही जीव में शांति हो जायेगी। जब मंदिर बाँधना भी बहुत मुश्किल होता था ऐसे समय में शास्त्रीजी महाराजने अक्षरपुरुषोत्तम की उपासना के प्रवर्तन के लिये पाँच शिखरबद्ध मंदिर तैयार किये और योगीजी महाराजने चैतन्य मंदिर तैयार किये। हमें कभी भी कोई नकारात्मकता की बातें करें तो हमें बिलकुल ध्यान नहीं देना चाहिए। गालिब का एक शायर मैंने पढा था, जिसका मतलब यह था कि हम हमेशा सामनेवाले की गलती देखते है लेकिन हमें पहले खुद की ओर देखना चाहिए। सन् १९६० में President of USA J.F.Kennedy ने कहा था कि ये देश आपके लिये क्या करेगा वह मत देखो, आप देश के लिये क्या करोंगे वह सोचो। वैसे सामनेवाला क्या करता है वो हमें नहीं सोचना है, हमें सभीमें निर्दोषभाव रखना है। पूरे हफ्ते में हम बहुत सारी क्रियाएँ करते है, लेकिन एक दिन हमें मंदिर में आने की आदत डालनी चाहिए। हमें मुफ्त में सबकुछ मिला है इसलिये उसकी कीमत नहीं है। योगीबापा कहते थे कि २७ हजार रुपये मिलते हो तो वह छोडकर भी हफ्ते ही सभा जरुर भरना। दिनकरभाई की तबियत अच्छी रहे और जैसे हँसते-खेलते उन्होंने प्रभु को राजी किया है वैसे हम भी कर पाये वही प्रार्थना।

प.पू. वशीभाई ने कहा कि साहेबजीने १ घंटे के प्रवचन में अक्षरपुरुषोत्तम उपासना की, गुणातीत समाज की, उनकी अमेरिका में ७० साल की धर्मयात्रा की और दिनकरभाई के विशिष्ट गुणों की तथा इसी देह में ब्रह्मरुप होने की जो सारी बातें की वह बहुत अद्भुत थी। संत के संबंध मात्र से सारी प्राप्ति सहज हो जाती है। सन् १९७१ में योगीजी महाराज स्वधाम पधारे और सन् १९७३ में साहेबजी गुरुहरि काकाजी

SantBhagwant Sahebji's 85th and P.P. Dinkarbhai's 80th Birthday celebration at Chicago

के साथ अमेरिका आये और आज Allentown में उन्होंने मंदिर खडा कर दिया। इस उम्र में छोटे से छोटे हरिभक्त के लिये भी वे विचरण करते रहते है।

दिनकरभाई का जीवन देखे तो ब्रह्मरुप होने की यात्रा में निर्दोषबुद्धि दृढ हो ऐसे कार्य करना वह उन्होंने सहज ही हमें समझाया है। उनका फोन भक्तों के लिये अविरत चलते रहता है। उनका पूरा समय केवल भक्तों के लिये होता है। जो भी संबंध में आये उसे ब्रह्मरुप करना वही उनके जीवन का सिद्धांत है। वे धीरज का दरिया है। जैसे अर्जुनने श्रीकृष्ण को आगे रखकर जीवन जीया वैसे हमें हमारे गुरु को आगे रखना हर कार्य करना है। तो हे दिनकरभाई, अब तक की हमारी सारी गलतियाँ माफ करके हम पर राजीपा बरसाना वही प्रार्थना।

प.पू. दिनकरभाई ने आशीष बरसाते हुए कहा कि इस उम्र में भी साहेबजी यहाँ पधारे उसके लिये उनको धन्यवाद है। ऐसे हमारे सभी संतों विचरण करते है, जिससे आत्मीयता ज्यादा बढती है। सन् १९७३ में गुरहरि काकाजी के साथ साहेबजी पधारे थे तब से अमेरिका की भूमि पवित्र हो गई। उसके बाद काकाजी बहुत बार यहाँ पधारे थे। हमारा लक्ष्य ब्रह्मरुप होकर परब्रह्म की भक्ति करने का है। उसमें दो मार्ग आते है। **(१)** पुरुष प्रयत्न **(२)** गुरुकृपा से। महंतस्वामीजीने भी अपने प्रवचन में कहा है कि धर्मनियम का पालन करना। उसमें हम जो शिथिलता रखते है वह न करें। उसका रहस्य यानि हम गुरु की आज्ञा का पालन पूर्णरुप से करें। उससे निर्दोषबुद्धि सहज दृढ हो जायेगी। काकाजी यानि निर्दोषबुद्धि के राजा। वह सहज ही दृढ हो जाये वही प्रार्थना।

अंत में प्रागट्यदिन निमित्त केक कटिंग भी हुई।

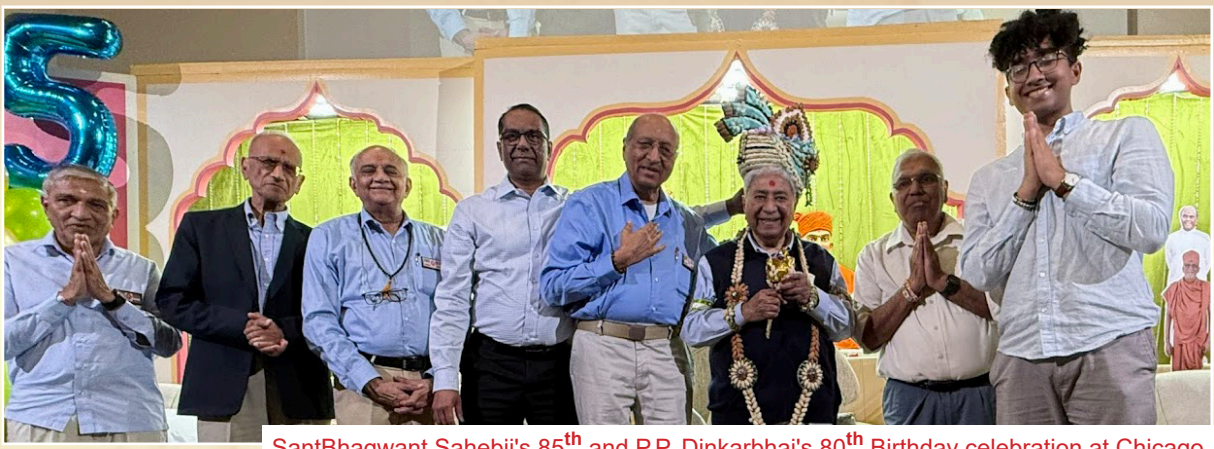

SantBhagwant Sahebji's 85th and P.P. Dinkarbhai's 80th Birthday celebration at Chicago

❊ **मंगलवार, दि. १५ सितंबर को झलझीलनी एकादशी निमित्त 'अक्षरधाम' स्वामिनारायण मंदिर, पवई में ठाकोरजी के आगे निलकंठवर्णी की मूर्ति के दर्शन हो रहे थे, जिसमें नौकाविहार का सुंदर सुशोभन भी किया गया था।**

इसी निमित्त दि. २४ सितंबर को प.पू. भरतभाई और पू. माधुरीबहन तथा सभी संतबहनें, युवकों और करीब १०० से भी ज्यादा हरिभक्त Gate Way of India श्रीठाकोरजी को नौकाविहार एवं गणेशजी के विसर्जन निमित्त गये थे।

At Gateway of India for Ganesh Visarjan

❊ हर साल की तरह इस साल श्राद्धपक्ष (भाद्र शुक्ल १५ से भाद्र कृष्ण ३०) के उपलक्ष्य में **'सर्व पितृश्राद्ध पर्व' 'अक्षरधाम' स्वामिनारायण मंदिर, पवई में बुधवार, दि. ०२ अक्टूबर की सुबह मनाया गया।** महापूजा में प.पू. भरतभाईने भगवान स्वामिनारायण से लेकर सभी अक्षरनिवासी गुणातीत स्वरुपों, ज्योतिर्धरो एवम् हरिभक्तों की स्मृति एवम् संकल्प करके उनको भावांजलि अर्पण की।

Shraddha Mahapooja at "Akshardham" Temple, Powai

उन्होंने आशीष देते हुए कहा कि श्राद्ध यानि श्रद्धापूर्वक अर्पण की गई एक भावना, जिसमें हम पितृओं का ऋण स्वीकार करते है। शास्त्रों मे श्राद्ध करने की बात बताई है। ईसाई लोग बाईबल में, मुसलमान कुरान में पूरा विश्वास रखते है। वैसे हमें भी हमारे शास्त्रों में भरोसा रखना चाहिए। आज Technology इतनी बढ गई है कि इन्सान को ज्यादा काम करना ही नहीं पडता। उसका हमको स्वीकार करना ही पडता है, वैसे जो श्राद्ध के बारे में बताया गया है वह श्रद्धापूर्वक हमें करना ही चाहिए। हमें मातापिता तथा गुरुजनों का सन्मान करना ही चाहिए। श्राद्ध कोई सामान्य क्रिया नहीं है। ऐसे बोला जाता है कि जो संतान मातापिता की सेवा नहीं करते उन्हें अपने संतानों से अपेक्षा नहीं रखनी चाहिए। दिवाली के दिन लक्ष्मीपूजन नहीं करेंगे तो चलेगा, लेकिन श्राद्ध के दिन पितृ की विधि अवश्य करनी ही चाहिए। यह बात सभी शास्त्र में लिखी है। तर्क से सत्य को झूठ्ठा और झूठ्ठा को सत्य कर सकते है। वैसे शास्त्र में जो भी बताया है उसे हमें मानना चाहिए, उस पर तर्क नहीं करना चाहिए। गुरुहरि काकाजी महाराजने The Real Essence of Tantra पुस्तक में समाधि तक अपना पूरा वृत्तांत बताया है, साथ ही Life after Death पर लिखा भी है। काकाजीने इसलिये स्वरुपयोग की सरल Technique हमें दी है। सत्य वह जो कभी बदलता नहीं है। हमारी दृष्टि बहुत सीमित है, हमारी बुद्धि से हम सब मान लेते है। लेकिन ऐसा न करके गुरु के वचन में हमें जीवन जीना है। तो आज जो भी श्राद्धपर्व की विधि करते है उनकी प्रार्थना महाराज सुने और सभीको सुखी रखें वही प्रार्थना।

❊ **सोमवार, दि. ७ अक्टूबर की भजन संध्या 'साधुता' के विषय पर गुरुहरि काकाजी महाराज की स्मृति में हुई और साथ ही प.पू. दिनकरभाई, प.पू. वशीभाई तथा पू. अश्विनभाई तथा पू. अेन्जीबहन का स्वागत चांदिवली में Megarugas Hall में सभी संतभाईयों, संतबहनों तथा स्थानिक हरिभक्तों की हाजरी में भक्तिभाव से हुआ।**

प.पू. भरतभाई ने आशीष देते हुए कहा कि सभी स्वरुपों विदेश में घूमने के भाव से नहीं, लेकिन केवल हरिभक्तों के घर पधरामणी, महापूजा-सत्संग करने के लिये ही जाते है। दिनकरभाई, वशीभाई और अश्विनभाईने ऐसे ७४ दिन की धर्मयात्रा की। इस उम्र में भी दिनकरभाई सभी स्थानों में विचरण के लिये जाते है। इस महिने हम दिनकरभाई का ८०वाँ प्रागट्यदिन सूरत में मनानेवाले है। उन्होंने गुरुहरि काकाजी की सिद्धांतिक प्रसन्नता प्राप्त की है। शास्त्रीजी महाराज के अस्थि का आधा अंश काकाजीने उन्हें तारदेव

Bhajan Sandhya at Megaragus Hall, Chandivali

मंदिर में प्रसादी के रुप में दिया था और कहा था कि आप अब हमारे ५०% भागीदार हो। ऐसे अपनी प्रिय चीज काकाजीने दिनकरभाई को दी थी। काकाजी कहते थे कि मेरे साथ दिनकरभाई का अंतरायरहित का संबंध है। अगर आपको सचमुच साधना मार्ग सरल बनाना है तो किसी एक संत को अपना गुरु बनाओ और वो कहे उतना करेंगे तो आपका काम हो गया। लेकिन हमें हम पर ही भरोसा है, बाकी सब पर संशय बहुत होता है।

जब अक्षरपुरुषोत्तम छात्रालय का कार्य हो रहा था तब काकाजी अनुपम मिशन के संतभाईयों के साथ उनकी हॉस्टेल में रहते थे। तब एकबार काकाजी भाईयों के साथ आराम कर रहे थे तब उनको पानी की प्यास लगी थी और मटका खाली था। तो काकाजी खुद मटका उठाकर भरकर ला रहे थे। तब पू.डॉ. वी.एस. की आँख खुली कि कौन है? तो काकाजी को ऐसे मटका उठाकर लाते हुए देखकर वो बोले कि काकाजी, आपने हमको उठाना चाहिए था। तो काकाजीने कहा कि योगीजी महाराजने मुझे आपकी सेवा के लिये भेजा है। यह सुनकर डॉ. वी.एस. के आँख में एकदम आंसु आ गये। जीवन में दो मुख्य सुख होते है - **(१) भौतिक सुख (२) आध्यात्मिक सुख।** काकाजी के जीवन यह दोनों बात सबसे ऊपर थी। सारे भौतिक सुख प्राप्त करने के बाद वे कहते थे मुझे भौतिक सुख जो अनित्य है उसकी कोई ईच्छा नहीं है, लेकिन मुझे कायमी सुख चाहिए। जो अविनाशी है। ऐसा आध्यात्मिक सुख काकाजीने खुद प्राप्त किया और सभीको बाँटा। तो हम प्रभु के होके केवल उनको राजी करने के मार्ग में आगे बढे वही प्रार्थना।

प.पू. दिनकरभाई ने आशीष देते हुए कहा कि गुरुहरि काकाजी के साथ जब भी हम विचरण में होते थे तो हमारी एक ही Commitment होती थी कि वो जो बोले वही करना है। उससे काकाजीने उनके दिल में हमें स्थान दिया। वही बात उन्होंने अपने गुरु योगीजी महाराज के साथ रहकर की थी। वैसे हमारे गुरु हमें जो भी आज्ञा करें उसमें केवल हाँ बोलना चाहिए। काकाजीने सभीको ऐसी तालीम दी कि उसीसे सबका जीवन बदल गया। उसके बाद उन्होंने काकाजीने उन्हें शास्त्रीजी महाराज के अस्थि दिये थे वह बात विस्तारपूर्वक बताई।

नवरात्रि के निमित्त सभी हरिभक्तोंने रास-गरबा करके आनंद भी किया।

Bhajan Sandhya at Megaragus Hall, Chandivali

❊ बुधवार, दि. १६ अक्टूबर, शरदपूर्णिमा के मंगलदिन अ.मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी का २४०वाँ, प.पू. दिनकरभाई का ८०वाँ, पू. अरुणभाई का ७१वाँ प्रागट्यदिन, ब्र.स्व. हरिप्रसादस्वामीजी, प.पू. प्रेमस्वरुपस्वामीजी और अन्य संतों का भागवती दीक्षा दिन 'अक्षरधाम' स्वामिनारायण मंदिर, पवई में भक्तिभाव से मनाया गया।

माहात्म्यदर्शन की शृंखला में प.भ. गिरीशभाई, ओ.पी. अग्रवालजी ने सभी गुणातीत स्वरुपों तथा अरुणभाई के विशिष्ट प्रसंग स्वानुभाव से बताये।

पू. माधुरीबहन ने कहा कि गुरुहरि काकाजी महाराज हमेशा वचनामृत ग्रंथ और स्वामी की बातें बहुत बार पढते थे। उसमें हमें हमारे सवाल का जवाब मिल ही जाते थे। भगवान और संत मिल गये है इसलिये हमें आनंद करते रहना है और अब जाग्रतता दृढ कर लेनी है। स्वामीजी का दीक्षादिन भी हम मना रहे है। वे देह से पर होकर जीवन जीते थे। वैसे ही आज प्रेमस्वरुपस्वामीजी हरपल भक्तों की सेवा में रत रहते है।

दिनकरभाई हररोज सुबह की आरती में हमें बहुत अच्छा मार्गदर्शन देते है। जो भी भक्तों बातें करते है तो ध्यान से सभी की बातें सुनते है। सरलता, साधुता, धीरज ऐसे दिव्य गुणों के दर्शन उनमें सहज ही होते है। अरुणभाई का जीवन देखे तो उनकी दृष्टि केवल काकाजी की ओर ही थी। पवई के संतभाईयों की भी अद्भुत सेवा की। अंत तक दासभाव से ही जीवन जीया। तो हमें निमित्त बनाकर हमारे गुरु जो कार्य करवाना चाहते है वह हम कर पाये वही प्रार्थना।

पू. किशोरभाई मास्टर्स ने कहा कि ऐसा बोला जाता है कि पहले मुमुक्षु भगवान को ढूँढने जाते थे। अब गुरु मुमुक्षु को खोज लेते है। वैसे काकाजी को मैं लंडन में मिला। उसी प्रकार दिनकरभाई को भी मिला। सत्पुरुषों के जीवन को जितना नजदिक से हम देखेंगे उतना समझ में आयेगा कि हम शब्दों वह बयान कर नहीं सकते। वे ऐसे दासत्वभाव में ही हरपल रहते है। ये सभी स्वरुपों ऐसे जो सेवकभाव से ही सभी की सेवा करते है। दिनकरभाई सभी में काकाजी को देखते है। उनकी हर सांस केवल भगवान का कार्य में ही लीन रहती है। स्वामिनारायण संप्रदाय के सभी संस्थाओं को वो Follow करते है। दिनकरभाई स्वयं शिक्षापत्री है। उसमें महाराजने जो आचारसंहिता बताई है उसके सहज ही दर्शन उनके जीवन में होते है। हम संबंध से ब्रह्मरुप है, लेकिन वह हमारे जीव में दृढ हो जाये वही प्रार्थना।

प.पू. वशीभाई ने कहा कि महाराज को जितना धन्यवाद दे उतना कम है क्योंकि वो गुणातीतानंदस्वामी को अपने साथ लेकर आये। हम अक्षर को प्राप्त कर लेंगे तो परब्रह्म के दर्शन हो जायेंगे। वच.ग.प्र. ७१ में महाराजने खुद बोला है कि मैं मेरे रहने का ऐसे अक्षरधाम को लेकर आया हूँ। वो मूल अक्षरमूर्ति यानि गुणातीतानंदस्वामी।

Sharad Purnima celebration at "Akshardham" Temple, Powai

स्वामी की बात में उन्होंने सांख्य की पराकाष्ठा की बात की है। स्वामी की प्रकरण १ की ३०३वी बात में उन्होंने कहा है कि हमें अक्षरधाम में जाना है, केवल वही एक संकल्प रखना। ऐसे हरिप्रसादस्वामीजी का भी दीक्षादिन हम मना रहे है। योगीजी महाराजने उनको भी जैसे महाराजने गुणातीतानंदस्वामी को दीक्षा दी थी वैसी ही दीक्षा दी थी। तो ऐसे अक्षरपुरुषोत्तम की सच्ची पहचान हमें हो जाये वही प्रार्थना।

प.पू. भरतभाई ने कहा कि योगीजी महाराजने एक पत्र में लिखा था कि हरिप्रसादस्वामी, आपने हमारे बहुत सारे डिपार्टमेन्ट सँभाले। फिर बापाने उसका लिस्ट भी बनाया। साधुता के आदर्श यानि गुणातीतानंदस्वामी। उनकी कुछ विशेषता मैं बताता हूँ। **(१)** उनकी दृष्टि केवल श्रीजी महाराज की ओर ही थी। वैसे हमारी दृष्टि भगवान की ओर होगी तो हम हमारे मार्ग से चलित नहीं होंगे। हम क्या करने आये है और क्या कर रहे है? उसकी समझ सहज ही होगी। **(२)** उनको भक्तों के प्रति लगाव ज्यादा था। **(३)** गुणातीतानंदस्वामी की बातें रहस्यमय है। सभी शास्त्रों का रहस्य उस पुस्तक में बताया है। उसमें बताया है कि करोड काम बिगाडके अपना एक मोक्ष सुधार लेना है। ऐसी सामान्य बात बताकर गुणातीतानंदस्वामीने जीवन जीने का मार्ग सरल कर दिया। तो दिनकरभाई, आपका प्रागट्यपर्व चल रहा है तो आप बहुत आशीष बरसाना वही प्रार्थना।

प.पू. दिनकरभाई ने कहा कि शरदपूर्णिमा का महिमा श्रीमद्भागवत में श्रीकृष्ण भगवानने रासलीला की तब से शुरु हुआ। योगीजी महाराजने सन् १९६७ को शरदपूर्णिमा के दिन गोंडल में पाँच संतों - हरिप्रसादस्वामीजी, प्रेमस्वरुपस्वामीजी, माधवजीवनस्वामीजी, यज्ञप्रसादस्वामीजी, योगीप्रसादस्वामीजी और एक पार्षदी दीक्षा नानजीभगत को दी थी। गुणातीतानंदस्वामी यानि कथावार्ता का अखाडा। हम कितने भी बडे सद्गुरु बन जाये लेकिन हमें दास का दास बनकर जीवन जीना है। घनश्यामभाईने भरतभाई के आवाज में स्वामी की बातों का Video बनाया है। वो जरुर से सुनना। उसमें शुरुआत में काकाजी के आशीर्वाद है, जिसमें स्वामी की प्रकरण ७ की ४१७ और

Sharad Purnima celebration at "Akshardham" Temple, Powai

प्रकरण ६ की २१८वी बात का उदाहरण दिया है। हम धुन बहुत करते है लेकिन वह ५ मिनट भी एकाग्र होके तो जरुर से करना है। तो प्रत्यक्ष की निष्ठा हमारी दृढ हो जाये वही प्रार्थना।

आज के इस मंगलपर्व पर ठाकोरजी की पाँच आरतीयाँ भी हुई।

संप-सुहृदभाव-एकता महोत्सव

*** समता, साधुता, महिमा, निर्दोषबुद्धि, निरपेक्षभाव और माहात्म्ययुक्त सेवा जैसे कईं दिव्य गुणों के प्रतीक और सदाय केवल 'ब्रह्मरुप होना' वही जीवन का एकमात्र उद्देश्य रखनेवाले एवं सभीको वही सिद्ध**

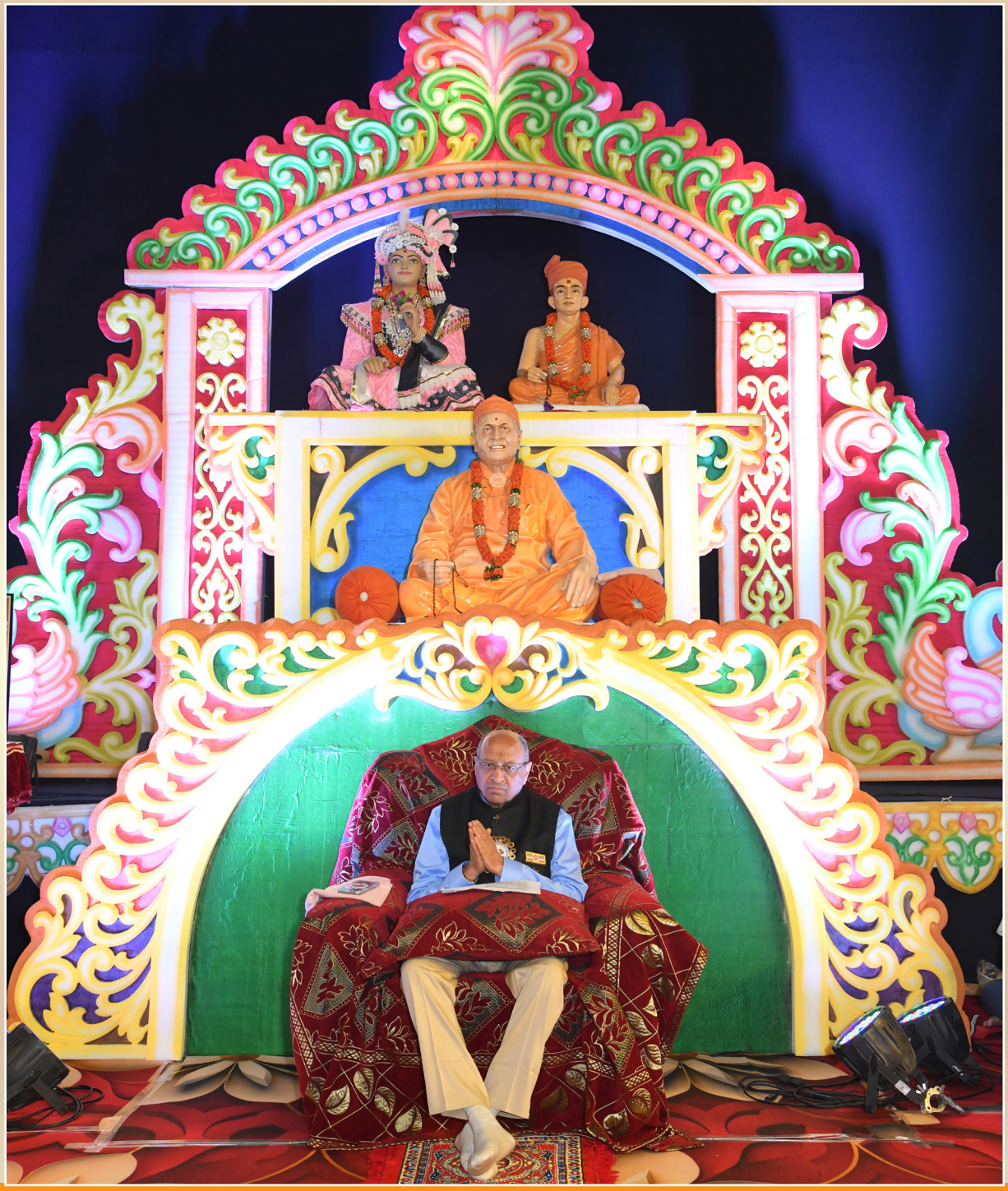

करवाने की इच्छा रखनेवाले गुरुहरि काकाजी महाराज के दिव्य मानससपूत भगवत् स्वरुप प.पू. दिनकरभाई का ८०वाँ प्रागट्यदिन इसबार भारत में मनाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। करीब २ साल पहले शिकागो के समर्पित तथा निष्ठावान युवानेता प.भ.डॉ. सपनभाई शाह के सूचन से भारत में यह समैया रखने का प्रस्ताव रखा गया था। तब कोरोना की महामारी की वजह से पूरे अमरिका में दहशत फैली थी। इसलिये सपनभाईने इस समैया को भारत में आयोजित करने का सुझाव रखा। क्योंकि भारत में अमरिका की तुलना में कोरोना का प्रभाव कम था। इसी साल मार्च महिने में शिकागो के सभी भक्तोंने तय किया कि भारत में यह समैया संप-सुहृदभाव-एकता को मुख्य विषय बनाकर गुणातीत समाज के सभी केन्द्रो को संमेलित करके बडे पैमाने पर मनाया जाये। जिसकी सारी जिम्मेदारी उन्होंने अपने सर ली और पवई में प.पू. भरतभाई तथा प.पू. वशीभाई से इस बाबत चर्चा भी की कि भारत से इतने हरिभक्त अमरिका नहीं आ पायेंगे तो बहेतर यही होगा कि अमरिका के हरिभक्तों भारत आये और दिनकरभाई का ८०वाँ प्रागट्यपर्व आनंदोत्सव के साथ मनाये। उसी दौरान सूरत में प.भ. पुरुषोत्तमदास मामा के उत्साह और सहकार से दि. ७ मार्च को भजन संध्या का आयोजन हुआ था। उनकी ईच्छा थी कि दिनकरभाई का प्रागट्यदिन भी उनके उसी विशाल स्थान में मनाया जाये, लेकिन इस साल बारिश की अनिश्चितता के कारण सूरत के कतार गाम स्थित अेप्रीकोट अेसी डॉम के बडे हॉल में अक्टूबर दि. १९ और दि. २० को इस उत्सव को बडे पैमाने में मनाने तय हो गया। इसके लिये पवई मंदिर के सभी संतभाईयों तथा संतबहनों तथा हरिभक्तोंने कडी महेनत करके इस आयोजन में उत्साहपूर्वक तथा भक्तिभाव से सहकार दिया। शायद गुरुहरि काकाजी महाराज की मर्जी ही हो वैसे पूरा आयोजन बिना कोई मुश्केली से सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

दि. १९ की शाम करीब ४ बजे अेप्रीकोट अेसी डॉम हॉल में दिल्ली से प.पू. गुरुजी, पू. सुहृदस्वामीजी और संतमंडल तथा कईं हरिभक्तों, प.पू. आनंदीदीदी, पू. बंसरीदीदी तथा कईं संतबहने तथा भाभीयों, समर्पित सेवको मिलकर करीब १०० से ज्यादा भक्तों, हरिधाम से प.पू. प्रेमस्वरुपस्वामीजी, प.पू. दासस्वामीजी, पू. योगीस्वरुपस्वामीजी और संतमंडल, प.पू. सौजन्यबहन तथा संतबहनों एवं सूरत के कईं अंबरीष हरिभक्तों, समढियाला से प.पू. निर्मलस्वामीजी, सांकरदा से स्नेहलस्वामीजी, पू. ब्रह्मानंदस्वामीजी और वजुभाई, अनुपम मिशन से प.पू. रतिकाका, पू. दिलीपभाई और संतभाईयों, प.भ. उमीबहन तथा अन्य बहनें, गुणातीत प्रकाश से पू. विरेनभाई, पू. ईलेशभाई और संतभाईयों, गुणातीत ज्योत से प.पू. मधुबहन, पू. हंसाबहन (गुणातीत), पू.डॉ. नीलमबहन, पू.डॉ. वीणाबहन तथा अन्य संतबहनें, सांकरदा से पू. जयश्रीबहन और संतबहनें, पवई से प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई, पू. राजुभाई, पू. अश्विनभाई तथा अन्य संतभाईयों और अन्य हरिभक्तों, पू. माधुरीबहन, पू. जयश्रीबहन तथा सभी संतबहनों तथा अन्य करीब २०० हरिभक्तों, शिकागो से पू. विराटभाई, पू. विजयभाई तथा अन्य कईं हरिभक्तों, पेरिस से प.भ. प्रवीणभाई लाड, प.भ. ठाकोरभाई

P.P. Dinkarbhai's 80th Birthday celebration at Surat

तथा अन्य हरिभक्तों, लंडन से पू. किशोरभाई मास्टर्स और हरिभक्तों तथा मुंबई, औरंगाबाद, नासिक, पूणे, नागपुर, ऑस्ट्रेलिया जैसे कईं स्थानों से देश-परदेश से करीब १२०० से भी ज्यादा हरिभक्तोंने इस भव्य समैया में भक्तिभावपूर्वक भाग लिया।

मंच की सजावट इतनी भव्यतापूर्वक की थी कि सभीको मंच को देखकर आनंद और अहोभाव की अनुभूति हो रही थी। मंच के मध्य में ठाकोरजी के नीचे गुरुहरि काकाजी की भव्य प्रतीमा, उनके आजुबाजु शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज, पप्पाजी, स्वामीजी, अक्षरविहारीस्वामीजी और साहेबजी की मूर्तियाँ मंच की शोभा बढा रही थी। मंच के मध्य में दिनकरभाई का आसन सुंदर रुप से सजाया गया था और सभी गुणातीत स्वरुपों मंच पर विराजमान थे। हॉल के सामने भोजन मंडप की शुरुआत में काकाजी तथा दिनकरभाई की प्रतिमा जिसके पीछे Niagara Falls के रुप में Selfie Point सभीको आकर्षित कर रहा था। मंच के आजुबाजु दिनकरभाई की विशिष्ट छबी का दर्शन सभीको सुंदर रुप से हो रहा था। साथ ही काकाजी द्वारा उनको दिये गये अद्भुत आशीष की स्मृति भी सभी को रही थी।

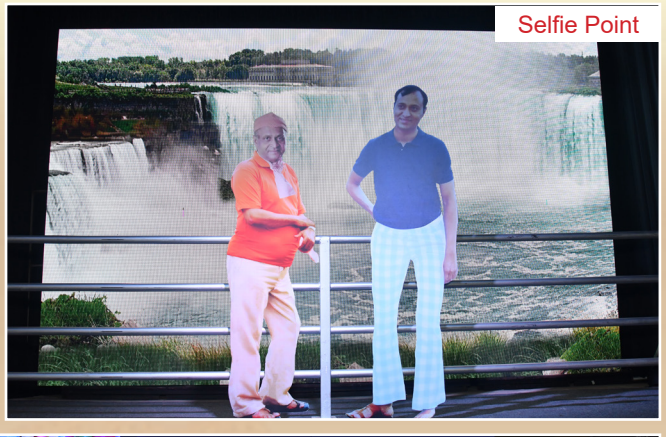

प्रारंभ में गायकवृंद और साथीओंने विशिष्ट भजनों प्रस्तुत किये।

प्रथम सत्र में बहनों की विशिष्ट सभा का आयोजन हुआ। सभी संतभाईयों, संतबहनों का विशिष्ट बेज के साथ स्वागत किया गया। उसके बाद दिनकरभाई के गुणों को तादृश करता विशिष्ट Quiz Game भी रखा गया था।

प.भ. श्रीदेवीबहन और प.भ.डॉ. रचनाबहन (USA) ने पूरे संचालन की सेवा की थी। प.भ. निशिताबहन मेहता, प.भ. अेमीबहन (दिनकरभाई की सुपुत्री) ने स्वानुभाव के

P.P. Dinkarbhai's 80th Birthday celebration at Surat

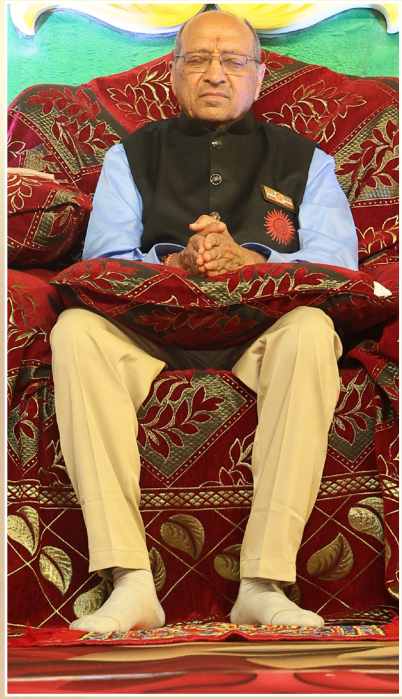

प्रसंग बताकर दिनकरभाई के विशिष्ट गुणों का दर्शन कराया। दिल्ली के पू. नित्यादीदीने उनके लिये विशिष्ट प्रार्थना की रचना की थी और जिसका पठन उन्होंने स्वयं किया। उसी प्रार्थना को विशिष्ट Frame में सजाकर दिनकरभाई को दिल्ली के हरिभक्तोंने अर्पण किया।

उसके बाद Video द्वारा प.पू. हंसादीदी के आशीष के साथ मंचस्थ सभी संतबहनों के भी आशीर्वाद का लाभ सभीको मिला। उन्होंने कहा कि अक्षरपुरुषोत्तम उपासना का कार्य योगीजी महाराजने गुरुहरि काकाजी, गुरुहरि पप्पाजी और प.पू. सोनाबा को सौंपा था, वह आज साकार होता हुआ दिखाई दे रहा है। काकाजीने भी अपना नाम दिनकर रखा था। ऐसे नाम धारण करनेवाले दिनकरभाई का प्रागट्यदिन हम मना रहे है। काकाजीने उनको जिस कार्य के लिये पसंद किया, उसका हम केवल दर्शन करेंगे तो भी आनंद होगा। हम बहुत भाग्यशाली है कि हमें ऐसे गुणातीत स्वरुपों की भेट मिली। आज हम भक्ति उत्सव मना रहे है। ऐसा संप-सुहृदभाव-एकता पर्व हम हमारे जीवन में उतारे वही प्रार्थना।

प.पू. मधुबहन (गुणातीत ज्योत)ने कहा कि हमारे गुणातीत ज्योत में एक परिवार हमारे साथ जुडा है, उनकी छोटी बेटीने दिनकरभाई के साथ फोन पर बातचीत की थी। उनके पिताजी, जब बीमार थे तब दिनकरभाई उस बेटी के परिवार के साथ धुन करते थे। कौन है? किसके संबंध से जुडे है? कुछ भी जाने बिना केवल संबंध की दृष्टि ही देखी। १५-१६ साल की वह लडकी को दिनकरभाई का इतना गुण आया कि पूरा परिवार सत्संगी हो गया। काकाजी की मर्जी वही दिनकरभाई का जीवन है। उन्होंने भगवा वस्त्र पहना नहीं है लेकिन काकाजीने उनका अंतर भगवा कर दिया। सभी हरिभक्तों के परिवार में भी वे उतना ही रसबस होकर उनको सहायरुप होते है। काकाजीने हमें सिखाया कि संबंधवाले में प्रीति रखना, वह बात दिनकरभाई के जीवन में सहज ही दिखाई देती है। ऐसे गुणातीत स्वरुप जहाँ जाते है वहाँ वे भगवान के साथ सभीको जोडने का कार्य ही करते है। उसी प्रकार हम भी सभी के साथ महिमा का संबंध करें वही प्रार्थना।

प.पू. आनंदीदीदी ने कहा कि मेरे जन्मदिन पर दिनकरभाई दिल्ली अचुक आते है। उनके सामने हम तो बहुत छोटे सेवक समान है, फिर भी वो हमारे लिये इस उम्र में आशीर्वाद देने आते है। मेरी तबियत अच्छी नहीं थी तो यहाँ आने का कुछ पक्का नहीं था, लेकिन दिल से मुझे इस समैया में आना ही था, तो वह सहज ही हो गया। दिनकर का अर्थ है सूरज। जगत का सूर्य शाम को अस्त होता है वह हम देख पाते है, लेकिन दिनकरभाई के रुप में गुरुहरि काकाजी महाराजने हमें अखंड सूर्य का तेज दे दिया।

जो भी उनके संबंध में आता है उनको वे प्रकाश देते ही है। उनका ७५वाँ प्रागट्यदिन शिकागो में मनाया था तब उनके लिये भजन बनाया था उसके शब्दों में जो भी बदलाव लाने थे वह गुरुजीने स्वयं किये थे। करीब एक महिना उस भजन को अच्छे से उन्होंने तैयार करवाया। ऐसा लग रहा था कि गुरुजी हरपल दिनकरभाई में ही थे। उस भजन मात्र से पता चलता है कि उनका जीवन बहुत सहज है। वे बडे गुणातीत विभूति है वह हम पहचान ही नहीं पाते। उस भजन की एक कडी है कि सोचता हूँ कि तुम इतने ऊँचे हो, पर इतने सस्ते बने हो हमारे लिये... इसके दो अर्थ होते है। उनका कद भी बहुत ऊँचा है और गुणातीत स्थिति भी उतनी ही ऊँची प्राप्त की है। उनकी हरपल की क्रिया हमें सभी के साथ कैसे संबंध करना चाहिए वह सीखाती है। मेरी Physiotherapy की Treatment चल रही थी तब दिनकरभाई का फोन चालु था। वो भाई तो मुस्लीम थे। मैंने दिनकरभाई की बात उससे करवाई। उन्होंने उनको जय स्वामिनारायण बोला और तीनबार शुक्रिया बोला। तो उसको उनका इतना गुण आया कि उस भाईने मुझे कहा कि ये आपके गुरु जब भी दिल्ली आये तो मुझे बताना, मैं उनके दर्शन करने जरुर आऊँगा। तो केवल दिनकरभाई का आवाज सुनकर उसको इतना गुण आया तो हमारी तो पूरी जिम्मेदारी उन्होंने ली है। शरदपूर्णिमा के दिन उनका जन्म हुआ। उसी प्रकार हमारी प्रीति पूर्ण चंद्रमा के समान गुरु के साथ ज्यादा बढनी चाहिए। तो ऐसे गुणातीत स्वरुप की सच्ची पहचान हमें हो जाये वही प्रार्थना।

प.पू. सौजन्यबहन (हरिधाम)ने कहा कि मैंने कही भी ऐसा समाज नहीं देखा जहाँ चार पांखो का समाज आत्मीयता से हिलमिलकर कार्य करता है। जगत में हठ-मान-ईर्ष्या के भाव ज्यादा होते है, उन सबसे पर होकर सभी महिमा से समैया में जुडे है तो सचमुच यह अक्षरधाम की सभा हो रही ऐसा लग रहा है। प.पू. प्रेमस्वरुपस्वामीजी की आज्ञा से मैं शिकागो गई थी। तब हमारी प्लेन देर रात पहुँचा था। मैंने देखा कि दिनकरभाई जैसे बडे सत्पुरुष स्वयं हमें अेरपोर्ट पर लेने आये थे। वो पल मैं कभी भी भूल नहीं सकती। बडे स्वरुपों से लेकर छोटे भक्त तक की भी वे महिमा से सेवा करते है। जब तक ऐसी महिमा हमारे अंतर में प्रगट नहीं होगी तब तक भक्ति प्रगट नहीं होगी, जब तक भक्ति प्रगट नहीं होगी तब तक

पराभक्ति प्रगट नहीं होगी और पराभक्ति प्रगट नहीं होगी तब तक अंतर का सुख प्राप्त नहीं होगा। अमेरिका जैसे देश में इतने अच्छे से सत्संग को बढाना वह बहुत बडी बात है। हम हमारा सबसे ज्यादा समय अन्यों के पास अपेक्षा रखने में व्यर्थ कर देते है। वे भक्तवत्सल स्वरुप है, वह बात दिनकरभाई के जीवन में सहज दिखती है।

गुरुहरि काकाजी महाराज की कृपा से आपके समक्ष मंच पर मैं बैठी हूँ। सन् १९७७ में मैंने ब्र.स्व. हरिप्रसादस्वामीजी को पत्र द्वारा प्रार्थना की थी कि मुझे साधु बनना है। उन्होंने वापस लिख कर यह कहा कि हम तो किसी बहन के लिये कोई निर्णय लेते नहीं है, लेकिन अगर काकाजी की

मर्जी होगी, वे आज्ञा करेंगे तो आप जरुर से साधनामार्ग में आगे बढना। तब मैं कॉलेज में पढ रही थी। मैंने प.पू. प्रेमबहन को कह दिया था कि काकाजी दक्षामंदिर में आयेंगे तब मुझे बताना। मुंबई से वे पधारे तब मैं तुरंत वहाँ पहुँची और उनको मुझे साधु बनना है उसके लिये प्रार्थना की। काकाजीने हाँ बोला तो मेरे कल्याण का मार्ग उनकी कृपा से खुल गया। प्रेमस्वरुपस्वामीजीने जो बात बताई है कि भूल जाना, छोड देना, पीघल जाना, झूक जाना और सहन करना। यह पंचामृत हमारे जीवन में दृढ हो जाये वही प्रार्थना।

प.पू. माधुरीबहन ने कहा कि मंच पर जो भी स्वरुपों विराजमान है वह हमारे हित के लिये सतत कार्य करते रहते है। दिनकरभाई में दासत्वभाव का सहज दर्शन होता ही है। हम मंदिर में केवल सामने जो मूर्ति विराजमान होती है उसके ही दर्शन करते है, लेकिन दिनकरभाई पूरे हॉल में जहाँ भी छोटी से छोटी मूर्ति भी रखी होगी उसके भी दर्शन करके प्रार्थना करते है। इतने बडे होते हुए भी स्वाध्याय भजन वे नियमित करते है। शिकागो में उनके प्रागट्यदिन पर उन्होंने खुद का नहीं, लेकिन संतभगवंत साहेबजी का प्रागट्यदिन मनाया। ऐसे गुणातीत स्वरुप कभी अपना ऐश्वर्य बताते नहीं है, लेकिन हमें अनुभव जरुर कराते है। कोई भक्त उन्हें कोई सवाल पूछे तो जब तक उसको समाधान नहीं मिलता तब तक उससे वे बात करते है। अंत में भजन की पंक्ति द्वारा दिनकरभाई के चरणों में अपनी प्रार्थना अर्पण की।

१० मिनट के विराम के बाद सभी वरिष्ठ संतों मंच पर पधारे और आगे का कार्यक्रम शुरु हुआ। सबसे पहले ऑस्ट्रेलिया के भक्तोंने प्रसंगों बताकर दिनकरभाई के साथ की स्मृतियाँ ताजी की और उनके मार्गदर्शन से उन सभी भक्तों के जीवन में कैसे बदलाव आये उसका सुंदर दर्शन कराया।

गुरुजी तो हमेशा कोई ना कोई आश्चर्यकारक स्मृति देकर सभीको खुश करते है वैसे ही आज भी Surprise में काकाजी के खास लिबास के रुप में लुंगी, जर्सी और टोपी तैयार कर जो वे दिल्ली से लाये थे

P.P. Dinkarbhai's 80th Birthday celebration at Surat

वह दिनकरभाई को पहनाकर तैयार कराया और जब दिनकरभाई मंच पर पधारे तो एक क्षण तो सभीको मानो काकाजी स्वयं पधारे हो ऐसा भव्य दर्शन हुआ। इस दर्शन मात्र से पूरी सभा आनंद से झूम उठी।

उसके बाद प.पू. प्रेमस्वरुपस्वामीजी ने कहा कि आज अक्षरधाम में विराजमान भगवान स्वामिनारायण से लेकर प.पू. हरिप्रसादस्वामीजी तक सभी स्वरुपों बहुत राजी हो रहे होंगे। उन गुणातीत स्वरुपोंने जो सुहृदभाव की बात हमें सीखाई वह हरपल हमारे जीवन में रहे ऐसे आशीष हमें दिनकरभाई के पास मांगने है। सरलता की साक्षात् मूर्ति यानि दिनकरभाई। गुरुहरि काकाजी महाराजने जो बात की थी वह आज तक उन्होंने पकड रखी है। सन् १९८७ में मैंने उनके जो शिकागो में दर्शन किये थे वही दर्शन आज भी सहज होते है। संतों की मूंडन की क्रिया भी उन्होंने की है। हरिप्रसादस्वामीजी अमेरिका में अंबरिष की जो शिबिर हुई थी तब सबसे पहले दिनकरभाई को उन्होंने याद किया था। उन्होंने कहा था कि दिनकरभाई हमारे सभी के आदर्श है। वे सभी को काकाजी स्वरुप ही मानते है। हम कितने भी नकारात्मक विचार लेकर उनके पास जायेंगे तो वे हमें सकारात्मक विचारों से भर ही देते है। हरिभक्तों को सत्संग कराने वे १ घंटे से ज्यादा हरिभक्तों के साथ फोन पर बातें करते है। काकाजीने जो संप-सुहृदभाव-एकता की तालीम दी वह बात उनके जीवन में सहज दिखती है। तो हे दिनकरभाई! जैसे गुणातीत स्वरुपोंने जो मार्ग बताया उसमें आपकी तरह हम भी आगे बढते रहे ऐसे आशीष आप देना वही प्रार्थना।

प.पू. भरतभाई ने कहा कि हम गुणातीत संत के संबंध में आते है तब मन में ऐसा पक्का हो जाता है कि मैं उनका हूँ और वो मेरे है। हम उनके है ऐसा बोलते जरुर है लेकिन करते अपने मन का ही। दिनकरभाई रुचि जाननेवाले और उससे भी आगे सुरुचिवाले है। सुरुचि यानि रुचि के मुताबिक बर्ताव करना। उससे भी आगे गुणातीत संत की मर्जी जानकर अपना सबकुछ समर्पित कर देना। गुरुहरि काकाजी हमेशा कहते थे कि दिनकरभाई मेरे से दस हजार माईल दूर है फिर भी मेरे पास है और आप मेरे पास हो फिर भी दूर हो। दिनकरभाई की नजर केवल काकाजी की ओर ही है। एकबार हरिप्रसादस्वामीजीने उनको बोला कि दिनकरभाई, आपको चश्मा अच्छा दिखता है। उस दिन से उनको कितने नंबर है उसका महत्व नहीं है, लेकिन उन्होंने आज तक चश्मा

पहनकर रखा है। उसी प्रकार स्वामीजीने आज्ञा की थी कि हररोज रात को चेष्टा सुननी। तब से वह नियमित चेष्टा सुनकर ही आराम में जाते है। ऐसे उनके बहुत अद्‌भुत प्रसंग है, जितने बोले उतना कम है। गुरुहरि काकाजी महाराज के जीवनचरित्र का ग्रंथ का लाभ लेना वही प्रार्थना।

इस उपलक्ष्य में पवई मंदिर की ओर से गुरुहरि काकाजी महाराज के जीवन और कार्य पर आधारित ग्रंथ 'अहो! गाथा गुणातीत विभुनी...' का विमोचन सभी मंचस्थ स्वरुपों द्वारा हुआ।

Inauguration of Book 'Aho! Gatha Gunatit Vibhuni'

अंत में सभी केन्द्रो की ओर से दिनकरभाई को विशिष्ट हार और भेट अर्पण हुए। साथ ही पवई मंदिर की ओर से तैयार किया हुआ विशिष्ट स्वागत भजन - 'श्रीजीना लाडीला आव्या रे...' प.भ. मिहिरभाई मालवी द्वारा प्रस्तुत हुआ और उसके साथ अन्य भजनों द्वारा सभीने नृत्य करके आनंद किया।

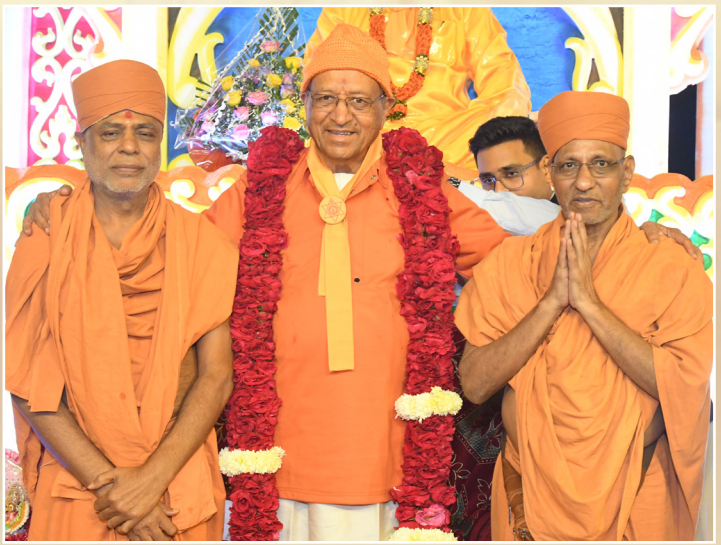

दि. २० की सुबह करीब ९.३० बजे पूर्णाहुति सत्र का आरंभ हुआ। प्रारंभ में प.भ. केतनभाई शाह (शिकागो)ने दिनकरभाई के गुणों का स्वानुभाव के प्रसंगो द्वारा सुंदर दर्शन कराया।

पू. पियुषभाई पनारा (गुणातीत प्रकाश, सूरत)ने कहा कि गुरुहरि काकाजी, गुरुहरि पप्पाजी और सोनाबाने इस गुणातीत समाज की स्थापना की है। सभी संस्था में संतों, बहनों, युवकों, गृहस्थों ऐसे चार पांखो का समाज आत्मीयता के कायदे से जीवन जी रहा है। ऐसे काकाजी स्वरुप दिनकरभाई का ८०वाँ प्रागट्यदिन हम मना रहे है। कल उन्होंने काकाजी के वस्त्र पहने थे तो हूबहू काकाजी के ही दर्शन यहाँ हो रहे थे। वे साधुता की मूर्ति है। वे स्वयं गुणातीत स्वरुप है फिर भी हमारे लिये साधु के आदर्श समान है। गुरुजी को काकाजी के प्रति बहुत लगाव था, लेकिन विमुख प्रकरण के बाद उन्हें काकाजीने दिल्ली में सत्संग आगे बढाने दूर भेजा। काकाजी की मर्जी जानकर दिनकरभाईने भी शिकागो में सत्संग का कार्य आगे बढाया। ऐसे दोनों स्वरुपोंने दूर रहकर भी काकाजी का राजीपा प्राप्त कर लिया। हे दिनकरभाई, हम जो भी साधना के मार्ग पर चल रहे है उसमें साथीयों के प्रति निर्दोषबुद्धि हरपल रहे वही प्रार्थना।

प.पू. वशीभाई ने इस समैया में सभी ने जो अद्‌भुत सेवा की उसके लिये आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि सभीको ऐसा ही अनुभव हो रहा है कि हम अक्षरधाम की सभा में बैठे है। गुरुहरि काकाजी कहते थे कि बडी-बडी मोटर आये या बडे-बडे महानुभावों आये, लेकिन हमारी निष्ठा कितनी बडी है? वही हमारे सत्संग की सच्ची पहचान है। संप-सुहृदभाव-एकता का दर्शन हमें दिनकरभाई में सहज होता है। कांतिकाका, महेन्द्रबापु सभीको आज हम याद करते है। उन्होंने जो हमारे लिये किया है वह हम भूल नहीं सकते। ये समैया में हरेक Department में युवकों, युवतीओं, गृहस्थोंने बहुत सेवा की है, जितना धन्यवाद दे उतना कम है। ७१ साल की दिनकरभाई की यात्रा का हम शब्दों में वर्णन कर ही नहीं सकते। हमारा लक्ष्य हमेशा स्पष्ट होना चाहिए कि हमें ब्रह्मरुप होना है। वह बात दिनकरभाईने जीवन में पकडके रखी। गुरुजीने जो दिनकरभाई को काकाजी के वस्त्र पहनाये वह बहुत बडा Surprise दिया है। ऐसा विचार आना इसलिये शक्य है क्योंकि उनमें वे काकाजी के दर्शन करते है। हे दिनकरभाई, जैसे पप्पाजी बोलते थे

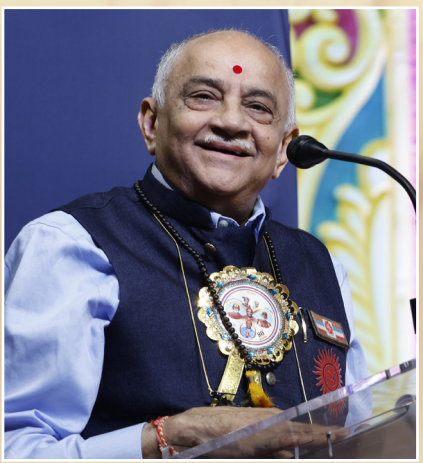

कि हम हरपल अक्षरधाम की समाधि में जीते हो जाये ऐसा हमारा जीवन बने वही प्रार्थना।

दिल्ली मंडल रचित भजन 'धाम के अलगारी साधु...' पू.डॉ. दिव्यांगभाईने भक्तिभाव से प्रस्तुत किया।

प.पू. गुरुजी ने कहा कि अभी हम दिनकरभाई का ८०वाँ प्रागट्यपर्व मना रहे है, इसलिये सभी उनकी महिमा की बातें करेंगे ही वह स्वाभाविक है। लेकिन हमें उन गुणों को जीवन में उतारना है। उन्होंने जो जीवन जीया है उस मार्ग से हमें चलित नहीं होना है। उनके जैसी सर्वदेशीयता, सेवकभाव के जो विशिष्ट गुण है वो हमारे जीव में अखंड दृढ रखेंगे वही इस समैया की फलश्रुति है। दिनकरभाई ऐसी विभूति है उसकी कल्पना मुझे काकाजीने ही करवाई थी। दिनकरभाई जब अमेरिका से आनेवाले थे तब देर रात तक तारदेव मंदिर में काकाजी उनकी राह देख रहे थे। तो मैंने काकाजी को पूछा कि दिनकरभाई ऐसी कौन-सी विभूति है जिनके लिये आप उनकी राह देख रहे है? काकाजी कहा कि अगर मैं वर्णन करुँगा तो आपको समझमें नहीं आयेगा, लेकिन आप यहाँ मेरे पास बैठे हो और वे दस हजार माईल दूर है फिर भी आप से ज्यादा वो मेरे नजदिक है। तो मैंने पूछा कि हमको दिनकरभाई जैसा होना हो तो क्या करें? तो काकाजीने कहा कि वहाँ अमेरिका में दिनकरभाई को मिलने जो भी आता है वो उनको काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी के संबंध में जोडते है। उस भावना से वे वहाँ सत्संग करवाते है, वह उनका विशिष्ट गुण है।

कोई अपनी तकलीफ लेकर हमारे पास आता है और हम उसको ऐसे गुणातीत स्वरुप में जोडे वह सरल बात नहीं है। दिनकरभाई के संबंध में जो भी आता है वो उन्हें प्रत्यक्ष स्वरुप में जोडते है, वह उनकी विशिष्ट करामत है। हमारा गुणातीत समाज अब बहुत बडा हो गया है। दिनकरभाई स्थितप्रज्ञ पुरुष है। काकाजीने उसका भेद समझाया कि गीता का और गुणातीत का स्थितप्रज्ञ। गुणातीत का स्थितप्रज्ञ यानि गुण का, प्रगट का, गुणातीत स्वरुप में बिलकुल भी भेदभाव किये बिना महाराज के स्वरुप को

मानना। काकाजीने कहा था कि हमें प्रत्यक्ष स्वरुपों को याद करके भजन करते रहना चाहिए। तो सहज ही हमें सभी में सहजानंद के दर्शन होंगे। महाराज दादाखाचर के दरबार में ३० साल रहे। उस समय में जीवुबा-लाडुबा ने जैसे महाराज का सेवन किया कि उन्हें गढडा में खुद के दरबार में रखा। ये कोई सामान्य या मानसिक ताकात की बात नहीं है, लेकिन आध्यात्मिक शक्ति थी। काकाजी कहते थे कि हमें एकदेशस्थ ज्ञान में से सर्वदेशीयता की ओर जाना है। काकाजी स्वधाम पधारे तब करीब देढ साल तक मैं उसमें ही डूबा रहा। फिर मैंने सोचा कि पूरा दिल्ली समाज, सेवकों मेरे पर अपेक्षा रखकर बैठा है और मैं ऐसे करुँगा तो सभी बिखर जायेंगे।

एकबार मैं प्लेन से गुजरात आ रहा था। तब अेरपोर्ट के गेट पर मैंने पप्पाजी को देखा। तो मैंने सहज ही पूछा कि पप्पाजी, आप यहाँ? तो उन्होंने कहा कि मैं काकाजी को लेने आया हूँ। वो हम सभी में काकाजी को देखते थे। ऐसे दिनकरभाई काकाजी के सच्चे सेवक है। हम सिर्फ बोलते है लेकिन ऐसे दिव्य दर्शन कर पाते नहीं है। काकाजीने पप्पाजी, स्वामीजी के साथ ऐसा समाज तैयार किया जहाँ उनका ही नाम लिया जाता है। खुद हमेशा छूपे ही रहे। काकाजीने कहा था कि आपको ऐसे लगता है कि मेरा कुछ भी नहीं, लेकिन भविष्य में हर कोई मुझे ही याद करेंगे। फिर मैंने पूछा कि याद करेंगे उसका मतलब? तो उन्होंने कहा कि ऐसे स्वरुपों तैयार होंगे कि जो ध्यान रखेंगे कि ये काकाजी के प्रतीक है, मूर्ति है।

कुछ बोलना नहीं पडेगा, उनका कार्य ही बोलेगा। सभी मंदिरों में मूर्तियाँ भी बैठेगी। तो आज मन में थोडा भी संशय लाये बिना हम ऐसा ही माने कि हम आज काकाजी का ही प्रागट्यदिन मना रहे है। तो ऐसा हम तैयार हो जाये और सहज ही उनका स्वीकार कर ले वही प्रार्थना।

प.पू. भरतभाई ने कहा कि गुरुहरि काकाजी महाराज हमारे पास जो करवाना चाहते है उसकी बहुत अच्छी बातें गुरुजीने की। आज हम दिनकरभाई में काकाजी प्रगट है उस भाव से काकाजी का ही प्रागट्यदिन मना रहे है। वे हमेशा सामनेवाले में केवल महाराज और काकाजी के ही दर्शन करते है। एकबार कोई भक्त आया

और उनको आप गुणातीत स्वरुप हो ऐसी सब बातें कह रहा था। तो दिनकरभाईने कहा कि मैं तो केवल दर्पण हूँ। दिनकरभाई महिमा की दृष्टि से सभी को निहारते है।

एकबार अमेरिका से वे मुंबई देर रात पधारे। तारदेव मंदिर वे पहुँचे तब काकाजी उनकी ही राह देखकर ही बैठे थे। उन्होंने दिनकरभाई को पूछा कि आप चाय लोगे या कॉफी? दिनकरभाईने तुरंत बोला कि चाय लूँगा। दिनकरभाई चाय और कॉफी दोनों भी नहीं पीते। इस प्रसंग का विश्लेषण करते हुए दिनकरभाईने कहा कि जब काकाजीने हमें चाय के लिये पूछा तब मैं बोलू कि मुझे कुछ नहीं चाहिए। तो Zero mark. अगर हम बोले कि काकाजी आप जो दो, तो 50 Percent, जब मैं बोलू कि चाय लूँगा, तो 100 Percent. काकाजी चाय पी रहे थे और वो चाहते है कि हम भी उनके साथ चाय पीये तो वह उनकी मर्जी जानकर किया। दिनकरभाई की तरह जीवन हम जीना चाहे तो भी नहीं कर पायेंगे। क्योंकि उनके अंदर जो दिव्य गुण अद्भुत है इसलिये उनका जीवन सहज है। तो दिनकरभाई के कुछ गुण हमारे अंदर भी आये ऐसे विशिष्ट आशीष वे बरसाये वही प्रार्थना।

प.पू. दिनकरभाई ने आशीष बरसाते हुए कहा कि शिकागो में हर साल में मेरा Blood test करने डॉ. सपनभाई के वहाँ जाता हूँ। तो दो साल पहले में गया था तब उन्होंने मुझे कहा कि कोरोना और Travelling की वजह से और सभी गुणातीत स्वरुपों की मर्जी जानकर आपका ८०वाँ प्रागट्यदिन हम भारत में मनाये तो अच्छा रहेगा। प.भ. पुरुषोत्तममामा के फार्म में मार्च की भजन संध्या यहाँ सूरत में हुई। फिर यही पर हमारा जन्मदिन मनाने का तय हुआ। शिकागो में जब अमितभाई और सभीने मिलकर हमारा जन्मदिन मनाने का तय किया था तब मेरी ईच्छा थी कि हम साहेबजी का प्रागट्यदिन मनाये। तो उस प्रकार उन युवकोंने सारी व्यवस्था की। ऐसे गुणातीत संतों की सेवा कर हम ऐसा मानेंगे कि हम हमारे ईष्टदेव की सेवा कर रहे है तो सब काम होंगे। गुरुजीने जो Surprise दिया उसके लिये मैं इतना ही कहूँगा कि मैं तो गुरुहरि काकाजी के रोम बराबर भी नहीं हूँ। उन्होंने जीवन में बहुत संघर्ष किये और उसे Opportunity की दृष्टि से देखा। ऐसे प्रसंग नहीं बनते तो हमारी प्रगति इतनी जल्दी नहीं होती। हम हरेक चीज में सकारात्मक ही देखे और उसकी आदत डाले। काकाजी तो उसके Master थे।

हम गुणातीत संत के Adopted Son है। ऐसा मानकर जीवन जीयेंगे तो सहज ही सकारात्मक भाव दृढ हो जायेंगे। तो वह हम सहज ही कर पाये वही प्रार्थना।

बात करते समय दिनकरभाई काकाजी को याद करते हुए गद्गद् हुए थे। इसलिये उन्होंने अपना वकतव्य कुछ क्षणों के लिये स्थगित करके दिल्ली के प.भ. भिखुभाई को प्रासंगिक उद्बोधन के लिये आमंत्रित किया था।

प.पू. रतिकाका (अनुपम मिशन, मोगरी) ने कहा कि दिनकरभाई का मोसाल सावली गांव है। वहाँ उसकी दादी के घर श्रीजी महाराज स्वयं पधारे थे। आज हम Atomic Energy के युग में जी रहे है। उसकी असर कई सालों तक रहती है। ऐसे दिनकरभाई के घर स्वयं महाराज पधारे हो तो वे प्रभु के स्वरुप ही माने जाते है। गुरुहरि काकाजी महाराज के संकल्प और धुन से Abbot Laboratary में मेनेजर बन गये।

दिनकरभाई मुंबई आये थे तब उन्हें किसी संबंधी की शादी में जाना था। वे महेन्द्रबापु के साथ काकाजी की आज्ञा लेने गये। तो काकाजीने पूछा कि क्यों जाना है? बापुने थोडी बातें की उसके बाद काकाजीने जाने के लिये हाँ कहा। ट्रेन में बैठने के बाद दिनकरभाई को अंतर्दृष्टि हुई कि काकाजी की मर्जी नहीं है तो मुझे नहीं जाना चाहिए। ऐसा मानकर वे और बापु वापस तारदेव आ गये। तो काकाजी बहुत ही राजी हो गये। तो वैसे हम हमारे गुरु की मर्जी जान पाये वही प्रार्थना।

उसके बाद अमितभाई (USA)ने संतभगवंत साहेबजी के आशीर्वाद संदेश का पठन किया।

फिर Video द्वारा ब्र.स्व. हरिप्रसादस्वामीजी के आशीष सभीको मिले।

उसके बाद सभी केन्द्र तथा हरिभक्तों से विशिष्ट हार तथा भेट दिनकरभाई को अर्पण हुए। सभा के अंत में जिन्होंने इस महोत्सव में विशिष्ट सेवा की उन सभीको स्मृतिभेट (Memento) दी गई।

अंत में उर्मिलाबहन और संगीतवृंदने विशिष्ट भजनों से सभीको आनंद करवाया। करीब १.३० बजे सभा की पूर्णाहुति हुई।

P.P. Dinkarbhai's 80th Birthday celebration at Surat

P.P. Dinkarbhai's 80th Birthday celebration at Surat

P.P. Dinkarbhai's 80th Birthday celebration at Surat

इस महोत्सव में रसोई की सेवा में प.भ. मितेशभाई, प.भ. विमलभाई लाड, प.भ. पियुषभाई मिश्रा तथा अन्य साथीओं, पूरे समैया का डेकोरेशन, मंडप, Selfie Point, सभा व्यवस्था में प.भ. संकेतभाई मेघानंद, पू. विशालदास, पू. आदर्शदास, प.भ. मुकेशभाई जाधव, प.भ. अक्षयभाई फुटाने तथा अन्य साथीओं, पू. मीनाबहन, पू. आरतीबहन तथा अन्य भाभीओं-युवतीओं, Audio/Video की सेवा में पू. विराटभाई, प.भ. विकासभाई येवले, प.भ. जीगरभाई तथा साथीओं, ट्रान्सपोर्ट की सेवा में प.भ. आकाशभाई, प.भ. प्रतीकभाई तथा उतारे की सेवा में प.भ. कल्पेशभाई लाड, प.भ. राजेशभाई, प.भ. प्रसादभाई पाटील, प.भ. राहुलभाई पटेल, प.भ. पियुषभाई ठक्कर, प.भ. रसेशभाई तथा अन्य युवकोंने पूरे समैया की जिम्मेदारी बहुत ही अच्छी तरह से सँभाली। भोजन पीरसने की सेवा में अनुपम मिशन-सूरत के प.भ. मुकेशभाई और प.भ. पूनमभाई शर्मा तथा युवकों-युवतीयाँ, गृहस्थों, भाभीयों, मोगरी से पू. परेशभाई चितलिया, पू. अनिलभाई, प.भ. धनंजयभाई तथा साथीओं, वेंचाण केन्द्र तथा Cloak room में प.भ. नयनभाई दिवेचा, प.भ. किशोरभाई गिल्डर तथा साथीओंने दान-भेट की सेवा में प.भ. दिनेशभाई लाड तथा साथीओंने भी सारी व्यवस्था अच्छे सँभाली। उतारे के साथ अन्य कईं सेवाओं में प.भ. मितेशभाई, पू. विराटभाई और पू. मननभाई ने अच्छे से जिम्मेदारी सँभाली।

अेप्रीकोट अेसी डॉम हॉल के श्री. परेशभाई और श्री. रविभाई का संतभाईयोंने Memento देकर अभिवादन किया।

पूरे कार्यक्रम में संचालन का कार्य प.भ. अमितभाई (USA) तथा पू. मननभाईने अद्‌भुत रुप से सँभाला।

उसके बाद सभी संतभाईयोंने हरिधाम, गुणातीत ज्योत, अनुपम मिशन-मोगरी, कंथारिया, सांकरदा तथा सूरत में कईं पधरामणी भी की।

At Saniya Kande Temple in Surat

At Rajkot

At Surat for Shriji Maharaj Paghadi Darshan

RNI Regn No : MAHMUL/2015/62272
Date of publication: 8th of every month
POSTED AT MUMBAI PATRIKA CHANNEL SORTING OFFICE MUMBAI 400001

Postal Regn No: MCW/329/2018-20
Date of posting:11th of every month

Summary of Events

(1) Bhajan Sandhya on 7th September at "Akshardham" Temple, Powai. (2) P.P. Vashibhai, P. Ashwinbhai's France and USA tour from 22nd July to 4th October. (3) SantBhagwant Sahebji's 85th and P.P. Dinkarbhai's 80th Pragatyadin celebration at DesPlaines Temple, Chicago on 27th and 28th September. (4) Jaljhilni Ekadashi celebration at "Akshardham" Temple, Powai on 15th September. (5) Visit by P.P. Bharatbhai and Saint Sisters along with about 100 devotees to Gateway of India for Ganesh Visarjan and Naukavihar of Shree Thakorji on 24th September. (6) Sarva Pitru Shraddh Mahapooja at "Akshardham" Temple, Powai on 2nd October. (7) Bhajan Sandhya on 7th October at Megaragus Hall, Chandivali. (8) Sharad Purnima - A.M.A.M. Gunatitanandswami's 240th, P.P. Dinkarbhai's 80th, P.P. Arunbhai's 71st Birthday Celebaration and B.S. Swamiji, P.P. Premswaroopswamiji and other Saints' Bhagvati Dikshadin celebration at "Akshardham" Temple, Powai on 16th October. (9) P.P. Dinkarbhai's 80th Pragatyadin celebration - Samp-Suhradbhav-Ekta Parva at Surat on 19th and 20th October.

Space for address

Space for franking

Printed Matter - Book Post

From

YOGI DIVINE SOCIETY
6D Sonawala Building, Tardeo,
Mumbai - 400 007 Tel: 2380 2527

'Akshardham' Swaminarayan Temple,
Near Hiranandani Hospital, Powai, Mumbai - 400 076
Tel: 2578 2151/2579 4314 Email: isrc@kakaji.org

Printed & Published by Bharat P Mehta on behalf of Yogi Divine Society & Printed at Jalaram Enterprise, Fairy Manor, 13, Rustom Sidhwa Marg (Gunbow Street), Fort, Mumbai - 400 001 & Published by Yogi Divine Society, 6D, Sonavala Building, 4th Floor, Tardeo, Mumbai - 400 007.

Editor: Bharat P Mehta